संत कबीर
तथा
तुलसीदास
का
हिंदी साहित्य में योगदान

संपादक

प्रा. व्ही. एच्. वाघमारे ▪ प्रा. एस. जे. पाटील

सहयोगी संपादक

प्रा. एस. एन. बिराजदार

प्रा. एन. एस. भस्मशेट्टी

प्रा. सौ. व्ही. एस. हिरोळे

Scanned by CamScanner

अक्कलकोट एज्युकेशन सोसायटी संचलित
सी.बी.खेडगीज बसवेश्वर सायन्स,राजा विजयसिंह कॉमर्स
आणि राजा जयसिंह आर्टस महाविदयालय अक्कलकोट ।

राष्ट्रीय परिषद

संत कबीर तथा तुलसीदास का हिंदी साहित्य में योगदान

दि. २०, २१ डिसेंबर २०१३

प्रधानाचार्य
प्रा. के.व्ही. झिपरे

उपप्रधानाचार्य
प्रा. एस.एन. बिराजदार

हिंदी विभागाध्यक्ष
प्रा. व्ही. एच. वाघमारे

सह-संयोजक
प्रा. सिध्दाराम पाटील
प्रा. निलेख भरमशेट्टी

Scanned by CamScanner

संत कबीर तथा तुलसीदास का हिंदी साहित्य में योगदान

प्रधानाचार्य
प्रा. के.व्ही. झिपरे
उपप्रधानाचार्य
प्रा.एस.एन. बिराजदार
हिंदी विभागाध्यक्ष
प्रा. व्ही. एच. वाघमारे
सह-संयोजक
प्रा. सिध्दाराम पाटील
प्रा. निलेख भरमशेट्टी

Published by:
Wizcraft Publications & Distribution Pvt. Ltd.,
129/498, Vasant Vihar, Solapur - 413001, Maharashtra
India

Copyright: Publisher
Year of Publication : 2013
ISBN - 978-93-83183-28-9
All right reserved

Rs. 350/-

Printed and bound by: Palavi Printers
129/498, Vasant Vihar, Solapur - 413001, Maharashtra
India (09637335551)

No part of this publication may be reproduced or transmitted in any form or by means, electronic or mechanical, including photocopy, recording, or any information storage and retrieval system, without permission on writing from the publisher.

Scanned by CamScanner

(३) विद्रोही कवि संत कबीर

१. संत कबीर के क्रांतिकारी विचार
प्रा. कुटे दिनकर वसंत — १५०

२. विद्रोही कवि संत कबीर
प्रा. निर्मला रत्नाकर माने — १५५

३. कबीर के साहित्य में विद्रोह
प्रा.सौ. वणेकर एम.व्ही. — १५९

४. कबीर का विद्रोह
प्रा.डॉ.बाळासाहेब सोनवणे — १६६

५.विद्रोही कवि संत कबीर
डॉ.भालेराव व्ही.के. — १७१

६. विद्रोही कवि संत कबीर
डॉ. सतीश अर्जुन घोरपडे — १७४

७. विद्रोही कवि संत कबीर
प्रा. महानंदा ज्ञानोबा कापसे — १८०

८. विद्रोही कवि - संत कबीर
डॉ. संतोष भड — १८३

९. विद्रोही कवि संत कबीर
प्रा. सौ. नफीस इनामदार — १८८

१०. विद्रोही कवि संत कबीर
जाजनुरे ज्योतीराम अर्जुन — १९३

११. विद्रोही कवि संत कबीर
सहा.प्रा. एस. जे. गायकवाड — १९६

१२. विद्रोही कवि : संत कबीर
श्री बाबासाहेब माने — २०२

१३.विद्रोही कवि संत कबीर
प्रा. व्ही.एच.वाघमारे — २०९

१४. आधुनिक सन्दर्भ में कबीर की प्रासंगिकता
शालिनी पाण्डेय — २१३

१५. विद्रोही कवि संत कबीर
प्रा. सौ. व्ही.एस.हिरोळे, — २१६

Scanned by CamScanner

विद्रोही कवि : संत कबीर

श्री बाबासाहेब माने

सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री शिव छत्रपति महाविद्यालय, जुन्नर, जिला- पुणे

हिंदी साहित्य के इतिहास में भक्तिकाल एक ऐसा काल होकर चला गया कि जिसमें भारतीय जनमानस को अपने जीवन को सुरक्षित रखने का महत्त्वपूर्ण आधार **'भक्ति'** ही महसूस होता था। चुँकि इस काल में समूचे उत्तर भारत की संपूर्ण जनता बाहरी आक्रांताओं और स्थानीय बादशाहों की धार्मिक अंधता की शिकार हो गयी थी । इस इलाके की लगभग संपूर्ण जनता इस्लाम और विदेशी मुस्लिम शासकों के प्रभाव में आ चुकी था । इन्हीं विदेशी मुस्लिम शासकों की कट्टरता के कारणवश यहाँ की जनता के जीवन के सामने अनेक मुश्किलें पैदा हो चुकी थीं। चौदहवीं शताब्दी में **तुगलक वंश** के बादशाहों के शासन काल में देश में धार्मिक एवं राजनैतिक अत्याचारों का उफान सा आ गया था। इसी शताब्दी के अंतिम समय में **तैमुर** ने आक्रमण कर दिया और अपनी धार्मिक कट्टरता का प्रचलन बढ़ा दिया। उसके अत्याचारों ने पश्चिमोत्तर भारत में हिंदुओं की धार्मिकता एवं जातीयता को जबरदस्त ठेंस पहुँचाई । तत्पश्चात् **सिंकदर लोदी** ने पुनः तैमुर के अत्याचारों की परंपरा को और अधिक तीव्र किया। फलस्वरूप भारतीय जनमानस का जीवन अंधकार के गर्त में समाने लगा। तत्कालीन सहिष्णुवादी हिंदू और मुसलमान दोनों ही नहीं, बल्कि समूचा हिंदू समाज इनके अत्यचारों से बुरी तरह से ग्रसित हो गया। उसका जीना बेहद मुश्किल बन गया। जो हिंदू समाज इस धरती पर अनादिकाल से जीवन यापन करता आ रहा था। उसमें आपसी वैमनस्य पैदा हो गया था। उसमें निहित उच्च पदस्थ एवं कुलीन लोग निम्न जाति के लोगों के प्रति घृणापूर्ण व्यवहार करने लगे थे। साथ ही कुछ सालों पहले दाखिल हुए मुस्लिम

Scanned by CamScanner

धर्म में भी धार्मिक कट्टरता बढ़ गयी थी। उसमें अनेक ऐसी बुरी परंपराओं का प्रचलन बढ़ गया था कि जो परंपराएँ कदापि स्वीकार नहीं की जा सकती थीं। साथ ही मुस्लिम लोग हिंदू समाज के प्रति तीव्र द्वेष भी रखने लगे थे। इसका कारण यह था कि मुस्लिम बादशाहों ने भारत के कई इलाकों को जीत लिया था और अपना प्रभाव पूरे इलाकों में जमा लिया था। मुस्लिम लोगों में हिंदू समाज के प्रति द्वेष पैदा होने का एक और दूसरा कारण यह था कि उनके आचार-विचार, रूढ़ि-परंपराएँ, धार्मिक कर्मकांड़ हिंदुओं से अलग थे । फलस्वरूप इन दो धर्मों के बीच संघर्ष पैदा हुआ। परंतु इस संघर्ष में सबसे ज्यादा प्रभावित हिंदू धर्म हो गया था। इसका एक कारण यह था कि मुस्लिम बादशाहों ने पश्चिमोत्तर भारत के लगभग सभी भागों में अपना वर्चस्व स्थापित किया था और उनका यह सिलसिला आगे भी जारी था। दूसरा कारण यह था कि हिंदू समाज में आपसी रंजिश बहुत यादा थी। परिणामस्वरूप सबसे अधिक नुकसान हिंदू समाज का ही हो रहा था । ऐसे में अपने आप की एवं अपने धर्म की रक्षा के लिए हिंदुओं के सामाजिक बंधन और अधिक दृढ़ एवं संकुचित होने लगे थे । परिणाम स्वरूप हिंदू समाज ईश्वर की भक्ति-भावना के सहारे ही अपने मन को तसल्ली देता दिखाई देने लगा था। जो भक्ति-भावना भक्तिकाल में सबसे अधिक प्रचलित एवं प्रसारित हो चुकी थी ।

तत्कालीन हिंदू धर्म के उच्च वर्णीय लोगों की धार्मिक एवं सामाजिक श्रेष्ठता और दंभ की भावना ने समाज की निम्न वर्गीय जनता में उनके विरूध्द विद्रोह की भावना उत्पन्न कर दी थी । ऐसे में शंकराचार्य द्वारा प्रतिष्ठापित अद्वैतवाद, रामानुजचार्य का विशिष्टाद्वैतवाद तथा माधवाचार्य और निंबार्काचार्य द्वारा स्थापित भक्ति के दर्शानिक सिध्दांतों ने भारतीय समाज में भगवान के प्रति भक्ति करने का अलख जगाने की कोशिश की, परंतु इसका प्रभाव जनसामन्य पर अधिक मात्रा में नहीं पड़ा । वह चँद पढ़े-लिखे लोगों तक ही सीमित रहा। आगे जाकर संत कबीर ने **'ब्रह्म'** को उसके दार्शनिक ऊँचे स्थान से नीचे यानी कि जनमानस में प्रचलित करने का स्तुत्य प्रयास किया। इनके अतिरिक्त सूरदास ने कृष्ण को और तुलसीदास ने राम को जनमानस के अंतर्-हृदय में पूरी तरह से प्रतिष्ठापित करने का प्रयास किया । उसी समय पश्चिमोत्तर भारत की धार्मिक और सामाजिक स्थिति के प्रभाव के परिणाम स्वरूप निर्गुण भक्ति का प्रचार बढ़ा । इस प्रकार से नाथों का हठ्योग, वैष्णवों की सररता, शंकराचार्य का मायावाद, सुफियों का प्रेमवाद, इस्लामी एकेश्वरवाद आदि तत्कालीन प्रचलित विविध दार्शनिक

Scanned by CamScanner

विचारधाराओं और उपासना पध्दतियों से प्रभावित जनता के बीच विद्रोही कबीर का प्रादुर्भाव हो गया ।

जिस समय कबीर का प्रभाव आम जनता में बढ़ने लगा था । उसके पूर्व से ही भारतीय हिंदू और मुसलमान इन दो धर्मों में अनेक सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कु-प्रथाएँ बढ़ गयी थी । जातीयता, बाह्याडंबर, मिथ्याचार, पर्दा-प्रथा, बहुविवाह, बालविवाह, विषमता, अज्ञान, अंधविश्वास आदि बुरे तत्त्वों ने तत्कालीन समाज को बुरी तरह से ग्रसित किया था। यह सिलसिला कबीर काल में तो और भी अधिक बढ़ गया था । मुस्लिम बादशाहों का वर्चस्व हिंदुस्तान के अधिकांश क्षेत्रों में होने कारण कबीर कालीन न्यायव्यवस्था काजियों और मुल्लाओं के हाथों में चली गयी थी । राजकीय अधिकारी भी भ्रष्ट तथा असभ्य बन गये थे । दूराचार और विलासी जीवन यापन करना उनके स्वभाव का प्रमुख अंग बन गया था । दूसरी तरफ हिंदुओं के राजा-महाराजाओं का भी यही हाल था । उनमें आपसी वैचारिक एवं जातिगत मतभेद अधिक मात्रा में था। ऐसे खतरनाक माहौल में कबीर ने भारतीय समाज को सच्चाई के रास्ते पर लाने के लिए तथा उसमें शुध्द मानवतावादी दृष्टिकोण निर्माण करने के लिए निड़र होकर अपनी आवाज बूलंद की और तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक कु-व्यवस्था के प्रति विद्रोह पुकारा। जहाँ एक ओर कबीर ने हिंदुओं में प्रचलित अनिष्ठ रूढ़ि-परंपराओं का जोरदार खंड़न किया, वहीं मुस्लिम धर्म की बेहुदी पध्दतियों पर भी कुठाराघात किया और इन दो धर्मों के बीच में समन्वय स्थापित करने के लिए प्रेम का मार्ग प्रशस्त किया । इतना ही नहीं, बल्कि प्रेम के मूल अर्थ समाकर उसे जीवन में उतारने की नसीहत दी -

"पोथी पढ़ि पढ़ि जग मुआ पंडित भायन कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय ।"[१]

उक्त पंक्तियों को देखने के बाद ज्ञात होता है कि कोई भी पंड़ित पोथियों और पुराणों को पढ़कर पंडित नहीं बन जाता, बल्कि वह तभी पंडित बन जाता है जब कि उसने प्रेम के ढ़ाई अक्षरों का सही अर्थ समझ लिया हो और उसे अपने जीवन में उतार लिया हो । साथ ही जनसामन्य को प्रेम से रहने की पाक नसीहत दी हो। अत: कबीर ने इस प्रेम तत्त्व को किसी शास्त्र या पुराण से नहीं लिया था, बल्कि तत्कालीन सामाजिक स्थिति को देखकर उनके मन में यह प्रेम तत्त्व प्रबल रूप में उत्पन्न हुआ था। इसी प्रेमतत्त्व के माध्यम से कबीर हिंदू और मुसलमानों के बीच

Scanned by CamScanner

समन्वय स्थापित करना चाहते थे और संपूर्ण भारतीय समाज में शुध्द मानवता का विकास करना चाहते थे । उन्होंने तत्कालीन समय एवं समाज को सूक्ष्म तरीके से देखा एवं जाना था । उसकी गहन अनुभूति भी की थी । साथ वे जीवन के असली मर्म को भी पहचान गये थे । इसलिए वें दोनों धर्मों के बीच पैदा हुई कडवाहट को दूर करने लगे थे । जहाँ एक ओर कबीर ने हिंदू और मुसलमानों को आपस में जोड़ने के लिए प्रेमतत्त्व का प्रतिष्ठापन किया । वहीं हिंदू धर्म की जातीय संकुचित वृत्ति का खुलेआम विरोध भी किया । कबीर कालीन हिंदू धर्म में जातीय भेदभाव का बोलबाला था । उच्चवर्णीय लोग निम्न जाति के लोगों को हीन समझने लगे थे । उन्हें मंदिरों में प्रवेश वर्जित किया था । इतना ही नहीं, बल्कि उन्हें सार्वजनिक पवित्र स्थानों पर जाने की भी मनाई थी । उनमें एक और यह धारणा फैलाई गयी थी कि भगवान की भक्ति एवं उपासना करने का अधिकार सिर्फ संवर्णों को है । निम्न जाति के लोगों के लिए भक्ति एवं उपासना करना पाप है । उनके द्वारा की गयी भक्ति कोई मायने नहीं रखती । परंतु कबीर ने तत्कालीन उच्च वर्णीय पंडितों को बुरी तरह से फटकार लगाई और जनसामान्य को भक्ति करने का असली अधिकार बता दिया । जिसकी वजह से उच्च वर्णीय लोगों को जबरदस्त झटका लग गया। उन्होंने निम्न जाति के लोगों को यह कहकर असली भक्ति का मार्ग बताया कि-

" जाति-पाति पूछै नहीं कोई ।
हरि को भौ सो हरि का होई ।।"[२]

इन पंक्तियों से यह तथ्य उद्‌घाटित होता है कि चाहे तत्कालीन समाज की दृष्टि से कितने ही निम्न धर्म का आदमी हो या वह चाहे कितने ही निम्न कुल में पैदा हुआ हो ? अगर वह सच्चे मन से भगवान की आराधना करता है तो निश्चित रूप से वह भगवान का हो जाता है। उसकी आराधना करने के लिए किसी जाति एवं धर्म की जरूरत नहीं होती है । उसके लिए केवल सच्चे मन एवं भाव की जरूरत होती है। इस प्रकार का मूलमंत्र कबीर ने तत्कालीन जनमानस को दिया । इसी मूलमंत्र से निम्न जाति का आम आदमी जाग उठा और उसमें भगवान की उपासना करने की प्रवृत्ति बढ़ गयी। इस प्रवृत्ति ने उसके मन में आपने आप की और अपने समाज की सुरक्षा की भावना पैदा की । कबीर के मंतव्य का एक दूसरा पहलू यह भी नजर आता है कि भगवान की भक्ति करने का अधिकार सभी लोगों को है। इसे कोई भी उच्च पदस्थ आदमी छीन नहीं सकता है और ना ही वह इसका कोई विरोध कर सकता है । इसी तरह से कबीर ने तत्कालीन राजनैतिक, धार्मिक एवं सामाजिक

Scanned by CamScanner

व्यवस्था के सामने नयी चुनौती खड़ी कर दी और उच्चवर्णीय लोगों की ढोंगी प्रवृत्ति को खुलेआम पैरों तले कुचल दिया । उच्च वर्णीय हिंदुओं की ढोंगी प्रवृत्ति को कुचलने के बाद उन्होंने मुस्लिम शासकों, मुल्लाओं तथा काजियों को भी बुरी तरह से फटकारा । जो लोग मुस्लिम धर्म के आदर्श तत्त्वों का प्रचार-प्रसार करने की बजाय , बुरे तत्त्वों का प्रचार-प्रसार कर रहे थे । उनका कबीर ने कड़ा विरोध किया और रोजा के नाम पर पशुओं का कत्ल करनेवाले तथा उन्हीं पशुओं का मांस भक्षण करनेवाले मुसलमानों को कबीर ने मुस्लिम धर्म का असली एवं आदर्श मर्म बता दिया । जो मुसलमान भाई रमजान के पवित्र महीने में गाय जैसे उपयोगी एवं गरीब पशुओं की हत्या करके उसका मांस भक्षण करते हैं। उनकी यह पध्दति खुदा (ईश्वर) को बिलकुल भी रास नहीं आती है तो कबीर को कैसे आयेगी ? चुँकि खुदा (ईश्वर) तो सबकुछ जानता है, वह सर्वव्यापी है । उसने ही सभी जीवों का निर्माण किया है । अत: वह अपने ही द्वारा निर्मित पशुओं को अपने लिए ही मरता हुआ कैसे देख सकता है ? यह प्रथा उसकी ईच्छा के पूर्णत: विपरित है । अत: कबीर ने अपनी जिंदगी भारतीय समाज में रहते हुए ही गुजारी थी । वें खुदा (ईश्वर) को सर्वव्यापी मानते थे । उन्होंने मुसलमानों की इस अनिष्ठ प्रथा को अपनी आँखों से देखा था। उनकी दृष्टि से खुदा (ईश्वर) की आराधना करने के बाद किसी निरपराध पशु को मारकर उसका मांस भक्षण करना पापी कर्म है । इससे खुदा कभी प्रसन्न नहीं हो सकता । इस यथार्थ को कबीर ने पूरी तरह से जान लिया था । इसीलिए तो उन्होंने मुस्लिम धर्म की इस अनिष्ठ प्रथा का कड़ा विरोध किया है। अत: वें कहते हैं -

"दिन में रोजा रखत हो, राति हनत हो गायी ।
यह तो खून वह बंदगी कैसे खुशी खुदायी ।।"[३]

इन पंक्तियों को देखने के बाद पता चलता है कि इस प्रकार का विरोध केवल कबीर जैसा व्यक्तित्व ही कर सकता था। चुँकि उस जमाने में खुलेआम किसी समाज की अनिष्ठ प्रथा का विरोध करना सबके बस की बात नहीं थी । केवल कबीर ने ही इन सामाजिक कुप्रथाओं के प्रति विद्रोह किया था । क्योंकि वे निड़र, फक्कड़ एवं मस्त-मौला स्वभाव के इंसान थे । उनमें निड़रता इस मात्रा में भरी हुई थी कि जैसे किसी बोरे में ठूँस-ठूँसकर अनाज भर दिया जाता है। मुस्लिम शासकों का दबदबा होने के बावजूद भी कबीर ने निड़रता के साथ इस बुरी प्रथा का खंडन किया। कबीर का उक्त मंतव्य उस समय के भारतीय समाज को एक महत्त्वपूर्ण

Scanned by CamScanner

संदेश तो देता ही है , साथ ही वह सामाजिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कु-व्यवस्था को बुरी तरह से कुचलता भी है। कबीर के उक्त मंतव्य का प्रयोजन यह था कि जिस तरह मनुष्य को स्वस्थ रूप से जीने का अधिकार खुदा (ईश्वर) ने प्रदान किया है । उसी तरह से अन्य जीवों को भी निसर्गप्रदत्त जीवन जीने का अधिकार खुदा (ईश्वर) ने ही प्रदान किया है । अत: यह कहाँ की पवित्रता है कि जिस जीव को खुदा (ईश्वर) ने निर्माण किया, उसी जीव की हत्या करकेउसका मांस भक्षण किया जाय । यह तो खून हुआ इस तरह के कार्यों से खुदा (ईश्वर) कैसे प्रसन्न हो सकता है ? इस तरह का सवाल कबीर ने तत्कालीन मुसलमानों के सामने खड़ा किया था । जो सोलह आने सही था । इसके बाद कबीर ने मुस्लिम समाज को भक्ति का एक और मार्ग यह दिया कि अगर खुदा (ईश्वर) की उपासना करनी है तो उसमें दिखावटीपन नहीं होना चाहिए । उसमें हमेशा पवित्रता का भाव होना आवश्यक है । मन-ही-मन अगर खुदा (ईश्वर) की उपासना की जाए तो भी खुदा (ईश्वर) उस उपासना को पूरी तरह से जान लेता है । चुँकि वह अंतरयामी है । वह सर्वव्यापी है। फिर यूँ जोर-जोर से चिल्ला-पुकार करके नमाज पड़ने की क्या जरूरत है ? क्या वह बहरा है ? इस तरह के कई खडे बोल कबीर ने तत्कालीन मुस्लिमों को सुनाए थे। जो जोर-जोर से नमाज पड़ने का कार्य करते थे । इस अनुचित प्रथा के विरोध में वें कहते हैं -

"कांकर-पाथर जोरि के मसजिद लई चुनाय ।
ता चढ़ि मुल्ला बाँग दे, क्या बहरा हुआ खुदाय ।।"[४]

जहाँ एक ओर कबीर ने मुसलमानों को खुदा (ईश्वर) की उपासना नेक तरीके से करने के लिए ललकारा, वहीं दूसरी ओर उन्होंने हिंदू धर्म में प्रचलित मुंड़न की बुरी पध्दति पर खुला विद्रोह प्रकट किया। तत्कालीन हिंदू धर्म में सिर मुंड़ाने की कु-प्रथा बहुत प्रचलित थी । उसमें उच्चवर्णीय लोगों द्वारा यह धारणा फैलाई गयी थी कि अगर कोई आदमी किसी पवित्र स्थान में जाकर अपना सिर मुंडाता है तो उसे मरने के बाद स्वर्ग मिल जाता है । अत: कबीर ने इस पर तीखा प्रहार करते हुए कहा था कि अगर सिर मुंड़ाने से आदमी पवित्र हो जाता है और उसे स्वर्ग में जगह मिलती है तो भेडों को तो सबसे पहले स्वर्ग में जगह मिलनी चाहिए । चुँकि उनका तो हर साल मुंडन किया जाता है । अत: मुंड़न की यह प्रथा बिलकुल भी सही नहीं है और ना ही भगवान इससे प्रसन्न हो जाते हैं । इसी तरह से कबीर ने तत्कालीन हिंदू एवं मुस्लिम धर्मों के बीच में प्रचलित अनेक अनुचित रीति-रीवाजों, बाह्याडंबरों एवं मिथ्याचारों का कड़ा विरोध किया था और तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक एवं

Scanned by CamScanner

राजनैतिक वर्चस्व के खिलाफ खुलकर विद्रोह किया था ।

अत: कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कबीर ने तत्कालीन हिंदुओं और मुसलमानों की कमजोरियों पर खुलेआम प्रहार किया और उन्हें सही रास्ते पर लाने का सफल प्रयत्न किया । उन्होंने शुध्द मानवतावादी दृष्टिकोण से एक ऐसा जन-आंदोलन चलाया जो आंदोलन तत्कालीन भारतीय समाज में प्रचलित अंधविश्वासों, अनिष्ठ रूढ़ि-प्रथाओं तथा मिथ्याचारों का प्रखर विरोध करता है । साथ ही सामाजिक विषमता पर भी कुठ़ाराघात करता है और सामंतों, शासकों, पंडितों और मुल्लाओं की घिनौनी विचारप्रणाली का तीव्र खंड़न करता है । अत: सही मायने में कबीर एक जननायक थे। वे एक ऐसे क्रांतिकारी थे कि जिन्होंने केवल मनुष्यता के लिए ही अपना जीवन अर्पित किया था और उसी मनुष्यता को स्थापित करने में उन्होंने अपनी पूरी जिंदगी गुजार दी थी। वें एक सच्चे समाजसुधारक होने के बावजूद एक प्रखर विद्रोही संत थे । इसमें कोई दोहराय नहीं हो सकती ।

संदर्भ सूची :

१) संत कबीर - राजेश्वर चतुर्वेदी, पृ. २७
२) वही, पृ. क्र. १०२
३) कबीर : एक रहस्यभरा व्यक्तित्व - डॉ. देवकृष्ण मौर्य, पृ. ६२
४) वही, पृ. क्र. ९५

Scanned by CamScanner

श्री वटवृक्ष स्वामी महाराज देवस्थान अक्कलकोट

विश्वस्त मंडळाकडून हार्दिक शुभेच्छा

देवस्थान संचलीत भक्तांच्या व स्थानिक जनतेच्या सोयीसाठी चालविण्यात येणारे उपक्रम

- सुसज्जीत भक्त निवास
- विद्यार्थ्यांसाठी पॉलिटेक्नीक कॉलेज
- श्री स्वामी समर्थ रुग्णालय
- गौशाळा
- शिशु विकास मंदीर
- पॉलिटेक्नीक कॉलेजच्या विद्यार्थ्यांसाठी विद्यार्थी वसतीगृह

विश्वस्त मंडळ

श्री. कल्याणराव उर्फ बाळासाहेब शिवाजीराव इंगळे	चेअरमन
श्री. सुभाष गणपतराव शिंदे	सचिव
श्री. विलास बाबूराव फुटाणे	विश्वस्त
श्री. विजय रामचंद्र दास	विश्वस्त
श्री. प्रदीप गजानन झपके	विश्वस्त
श्री. आत्माराम मारुती घाटगे	विश्वस्त
श्री. महेश कल्याणराव इंगळे	विश्वस्त
श्री. दयानंद सिध्देश्वर हिरेमठ	विश्वस्त
श्री. उज्वलाताई कमलाकर सरदेशमुख	विश्वस्त

महाविद्यालयात होणाऱ्या विविध विषयाच्या
राष्ट्रीय व राज्यस्तरीय परिषदांना हार्दिक शुभेच्छा

श्री स्वामी समर्थ

श्री राजेराय मठ
श्री स्वामी समर्थ पादुका मंदीर
सदगुरु बेलानाथ महाराज स्वामी मंदीर
सुविधा : भक्तनिवास, ध्यानमंदीर, महाप्रसाद, ग्रंथालय इ.

प्रा. किसन झिपरे	श्री. विकास दोडके	ॲड. शरद फुटाणे
सचिव	उपाध्यक्ष	अध्यक्ष

श्री. व्हि. एम. जवदेव — श्री. ए. बी. रामन — ॲड. अनिल मंगरुळे
श्री. बिल्वराज नाझर — श्री. भुवनेश वर्टे — श्री. दत्तात्रय मोठे
श्री. विजयराज गाजुल — श्रीमती वत्सला मोरे

विश्वस्त मंडळ

श्री. अवधूत नाझर — श्री. चनबसप्पा हिंडोळे
सल्लागार मंडळ

Board of Directors of Akkalkot Education Society

Shri Subhash C Dhane	Shri Shivsharan Rachappa Lokapure	Shri Shivsharan Chanbasappa Khedgi
Secretary	Vice-Chairman	Chairman

Members

Shri Chanbassappa Basavarappa Patil
Shri Shrimant Shivlingappa Hippargi
Shri Siddram Kalyanni Bhirhade
Shri Chandrakant G. Swami
Shri Ashok Revanshiddhappa Harkud
Shri Basalingappa Shivsharan Khedgi
Shri Sunil S. Mashal
Adv. Anil Shambhuling Mangrule
Smt. Subhadra Suryakant Sathe

WIZCRAFT
Publications & Distribution Pvt. Ltd.

Registered Office:
129/498, Vasant Vihar, Near Old Pune Naka, Solapur- 413 001 (Maharashtra) India
09637335551, 09665950097, 09421061620
Website: www.contemporaryresearchindia.com, **E-mail:**wizcraftpublication@gmail.com

ISBN 978-93-83183-28-9
978-93-83183-28-9

Scanned by CamScanner